प्रकाशनार्थ

पटना, **15** अक्टूबर। बिहार संग्रहालय के निदेशक, श्री अंजनी कुमार सिंह, ने आज आशावादी स्वर में कहा कि सिक्की कला उत्पादों के लिए विपणन आउटलेट्स का विकास नागरिकों में पर्यावरणीय चेतना के बढ़ने से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। उन्होंने होटलों में पर्यावरण के अनुकूल डस्टबिन के उपयोग को इसका प्रमाण बताते हुए युवा प्रशिक्षुओं से आग्रह किया कि वे अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग करके उपयोगी सिक्की उत्पाद तैयार करें। उन्होंने प्रसन्नता जताई कि सब कुछ सही दिशा में जा रहा है और राज्य में सिक्की शिल्प के लिए बाजार विकसित हो रहा है। बिहार का माहौल अब इन गतिविधियों के लिए अनुकूल हो गया है और इसका लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने गर्वपूर्वक बताया कि बिहार में पेपर मैश, सुजनी आदि जैसी लोक कलाओं में 15 पद्मश्री पुरस्कृत कलाकार रहते हैं।

श्री सिंह सिक्की आर्ट डिज़ाइन के संवर्द्धन हेतु आयोजित 10-दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के प्रतिभाशाली छात्रों को प्रमाण पत्र बाँटते वक्त यह बातें बोल रहे थे। इस पहल का आयोजन एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) की EIACP-CSEC इकाई द्वारा किया गया था तथा भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा समर्थित था।

'अद्यतन' संस्था की आस्था अनुपम ने नवप्रशिक्षित सिक्की कलाकारों से वादा किया कि उनकी संस्था आद्री के साथ मिलकर उनके सिक्की उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य दिलाने और विपणन में सहायता करेगी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले कुछ प्रतिभागियों ने भी अपनी राय व्यक्त करते हुए कहा कि सिक्की को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है और वे स्वयं को इस मौके को पाने के लिए सौभाग्यशाली मानते हैं। बहुपुरस्कृत सिक्की कलाकार नज़्दा खातून भी सभा में उपस्थित थीं | उन्होंने सुझाव दिया कि छोटे आकार के सिक्की उत्पादों के विपणन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

EIACP-CSEC की समन्वयक डॉ. मौसुमी गुप्ता ने पूरे कार्यक्रम का संचालन किया। आद्री के डॉ. सुनील कुमार गुप्ता, सुश्री पूजा कुमारी, मौसम बहार, और संजीव कुमार ने भी कार्यक्रम को अपना सहयोग प्रदान किया।

(अभिषेक प्रसाद)